साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 2, अंक 34, अप्रैल(प्रथम), 2018

25 मार्च, रामनवमी विशेष:

जन - जन के मन पैठे राम

घनश्याम बादल

राम कौन हैं ? कहां रहते हैं? निराकार हैं या साकार? हैं भी या नहीं ? हैं तो सबूत क्या है ? नहीं तो फिर युगों - युगों से चली रही आस्था क्या है ? अनास्था , तर्क और नास्तिकता भरे इस विज्ञानयुग में राम , उनके जन्म व जन्मोत्सव पर कितने ही सवाल खड़े होने या किए जाने के बावुजूद कम से कम भारत में तो राम जन - जन में पैठे हैं , सदियों से पैठे हैं और ऐसे कोई संकेत या हालात लगते भी नहीं कि वें यहां से, यहां के हिन्दुओं के मन से , यहां की संस्कृति से , कभी भी लोप या गायब हो पाएंगें ।

तर्क व आस्था के बीच राम

राम का जन्मदिन मनाना बहुत सारे नास्तिकों और तर्कवादियों के लिए शंका पैदा वाला हो सकता है । पर आस्थावान राम भक्तों के लिए रामनवमी पर जष्न आस्था व विष्वास और अपने अराध्य के महिमामंडन का अवसर बनकर आता है , राम में उन्हे भगवान दिखते हैं , मर्यादाओं के पुनर्स्थापक नज़र आते हैं , मोक्ष देने वाले वैकुण्ठशायी विष्णु के अवतार दिखते हैं ।

'राम नाम कलजुग आधारा

आज से लाखों साल पूर्व त्रेता में पैदा हुए राम के नाम पर आस्था के मेले लगाना और उनके नाम पर मंदिर बनाने मात्र के आष्वासन से ही जन - जन को लुभा लेना भारत जैसे अद्भुत देष में ही संभव है । भारत ऐसा देश है जहां आज के मुद्दे गौण हो जाएं और हम लाखों साल पहले पैदा हुए , या नास्तिकों के अनुसार कभी हुए ही नहीं राम आज भील सत्ता पद व प्रभुता देने वाले एक बड़े कारक हैं तो कहना पड़ता है कि कोई बात तो है राम के नाम में तभी तो गोस्वामी तुलसी दास को कहना पड़ा ''राम नाम कलजुग आधारा ''

कालपार नहीं , मर्यादा पुरुषोत्तम

मर्यादा पुरुषोत्तम कहे जाने वाले राम, अपने समय के एक छोटे से राज्य अयोध्या के राजा दशरथ के पराक्रमी बेटे , पितृ आज्ञा के पालक , दुष्टहंता शोषितों पीड़ितो के रक्षक , नारी का सम्मान करने व बचाने वाले नायक , अपनी प्रजा के भावों को समझने व उनहे महत्ता देने वाले राजा , अपने न्याय के बल पर रामराज को अक्षुण्ण व अमर बना देने वाले ऐसे राजा थे जो अपनी पत्नी का महज एक धोबी के लांछित करने पर त्याग कर देने वाले और फिर उसी के वियोग में सरयू में जल समाधि लकरे , जान दे देने थे बेशक राम में कुछ तो ऐसा है ही कि वें कालपार होने का नाम नहीं लेते । विवादों में रहकर भी पूज्य बने रहते हैं । अपने मरण के लाखों साल बाद भी अमूर्त रूप में जिंदा रहते हैं । मिथकों व कालगणना के हिसाब से चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी राम का जन्म ठहरती है ।

राम जन्म व काल निर्धारण

भले ही दशरथपुत्र राम के जन्म व उनके काल निर्धारण पर विद्वान एकमत न हों , राम के अस्तित्व पर उंगलियां उठाते हों पर सुखसागर जैसे ग्रंथों में राम का जन्म त्रेता में होना माना गया हैं , जिसके अनुसार कलियुग की अवधि 4,32,000 वर्ष है जो कि सबसे छोटा युग है , द्वापर उससे दोगुना व त्रेता उससे भी दोगुना होना मानते हैं इस तरह राम आज से कम से कम 12 से 14 लाख वर्ष पूर्व हुए हांेगे ।

एक अन्य विद्वान तो राम की जन्म तिथि 5414 ईसा पूर्व यानि चैत्र मास के षुक्ल पक्ष की नवमी को सिद्ध ठहराते है । अब यह आकलन कितना सही या गलत है यह तो नहीं कहा जा सकता पर यह सच है कि राम आज भी उच्च जीवन मूल्यों व त्याग के लिए प्रेरित करते हैं ।

भारतीय संस्कृति व मूल्यों का प्रतीक

आज भी राम का नाम भारतीय संस्कृति , सभ्यता , संस्कारों के मूल्यों का प्रतीक है । सार रूप में कहें तो राम की छवि आज भी एक आदर्ष पुत्र , पति , भाई व शसक की है और इसीसे प्रेरित हो आम आदमी रामराज के सपने पाले है आज भी ।

गज़ब की प्रतिभा

राम , भक्तों की दृष्टि में विष्णु के पूर्ण अवतार हैं , व्यवहारवादियों की नज़र में वें व एक सर्वगुण संपन्न आदर्ष मानव । राम भगवान हों या न हों पर आदर्ष जननायक तो ठहरते ही हैं । जनश्रुतियों व रामायण की कथा में राम अहिल्या , केवट , शबरी , सुग्रीव , जटायु या विभीषण जैसे हर आस्थावान त्रस्त व पीड़ित पात्र को संकट से मुक्त करतें हैं । वें उनके के शाप , ताप ,शोक व संताप हरते हैं । इस कथा के अनुसार तो जो भी जाने या अनजाने में भी राम की षरण में जाता है उसे मोक्ष प्राप्त होता है ।रामयण में वर्णित श्रीराम की गुरु भक्ति व समर्पण अद्भुत है गुरु की आज्ञा का पालन वें पूरे समर्पण के साथ करते हैं । यदि वशिष्ठ से वें बचपन में शिक्षा व शास्त्रज्ञान लेते हैं तो विश्वामित्र से वें अल्प समय में ही शस्त्र विद्या न केवल सीख लेते हैं अपितु उसमें इतने पारंगत हो जाते हैं कि उसका उपयोग करके मायावी राक्षसों ताड़का , मारीच व सुबाहु जैसे आतााईयों का नाश कर डालते हैं । यानि राम में गज़ब की प्रतिभा रही है ।

स्त्री उद्धारक व पराक्रमी

वें जरुरत पड़ने पर दुर्बलों को सताने, मारने तथा उनका षोषण करने वालों को पहले तो सत्पथ पर लाने का प्रयास करते हैं पर , जब ऐसे लोग अत्याचार सीमा पार करने लगते हैं तब राम दुष्टहंता बन जाते हैं ,सागर को सोंख लेने तक पर उतर आते हैं अग्नि बाण साध लेते हैं , दूसरों की ताकत को ही अपनी ताकत बना प्रयोग करने वाल , दुराचारी बाली जैसों का छुपकर भी वध करने से परहेज नहीं करते हैं । स्त्री उद्धारक होने के बावुजूद वें स्त्री जाति को बदनाम करने वाली ताड़का और लंकिनी का वध भी करते हैं यानि राम में पराक्रम कूट कूट कर भरा है।

संवेदनशील राजा

राम बहुआयामी है ,धर्मनिरपेक्ष हैं , जाति पांति तथा ऊंच नीच से दूर हैं । राजा के रूप में राम का कोई सानी नहीं है । वें अपने राज्य की ऐसी व्यवस्था करते हैं कि रामराज्य आने वाले युगों के लिए भी एक आदर्श राज्य बन जाता है ।

कहने वाले सही ही कहते हैं कि जहां राम जैसा राजा हो वहां अनिष्ट नहीं हो सकता । राम स्वयं सादा जीवन उच्च विचार का पालन करते हैं पर अपनी प्रजा को सारी सुविधाएं व सुख देने में कोई कसर नहीं उठा रखते । आज भी प्रजा अपने षासकों में राम की छवि ढूंढती है । वें अपने काल के ही नहीं सर्वकालिक संवेदनशील राजा है ।

आज भी बहुत कुछ सीख सकते हैं

छोटे छोटे संसाधनों का सही व उपयोग सीखना हो तो राम आज भी एक आदर्ष प्रबंधक ठहरते हैं । राम ऐसे दक्ष सेनानानायक हैं कि दिव्य अस्त्र षस्त्रों से युक्त महाबली रावण को मायावी पुत्रों , राक्षसों व लंका की सेना सहित महज बंदर भालुओं की मदद से परास्त कर देते हैं । आज के परिप्रेक्ष्य में कह सकते हैं कि राम उच्च श्रेणी के ऐसे एम बी ए हैं जों उपलब्ध संसाधनों के सर्वोत्तम उपयोग में सिद्धहस्त हैं ।

राम कबीर के लिए निराकार, तुलसी के लिए साकार हैं । वाल्मीकी की प्रेरणा हैं, महाकवि कंब उन पर रीझते हैं तुलसी उनके भक्त हैं । सूर्यकांत त्रिपाठी व मैथिलीशरण जैसे कवि उन्हे कलियुग में भी प्रेरक मानते हैं ।

अब हम राम को 'भगवान' मानें , न मानें ,उन्हे पूजें , न पूजें , । उनके अस्तित्व पर शक करें या यकीन पर एक बात तो है कि , राम से व उनके द्वारा स्थापित मूल्यों से हम आज भी बहुत कुछ सीख सकते हैं ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें